

समझे, तो भय नहीं रखना चाहिए। भय नुकसानकारक है। भय अन्य विकारों को भी अंदर छिपाकर बिठा लेता है। सत्यता को प्रत्यक्ष करने में भय रोकता है। अपना स्वरूप बनाने में और दूसरे के सामने उसे रखने में भय रोकता है, इसलिए मैं किसी भी हालत में भय को अंदर से निकालूँ। ग्रंथ साहिब में है - 'अकालमूर्त, निर्भय', जब अपने को आत्मा समझूँगी तो निर्भय बनूँगी क्योंकि आत्मा को तो काल नहीं खाता। मनुष्य को तो मृत्यु का भय होता है। इंसान, इंसान के अधीन होता है तो भी भय होता है। भय अच्छा चिंतन नहीं करने देगा। ईश्वरीय चिंतन में रहने नहीं देगा। सर्वशक्तिवान से शक्ति खींचने नहीं देगा इसलिए मैं सर्वशक्तिवान से शक्ति खींचकर निर्भय रहूँ। मैं सबके साथ संबंध अच्छा रखने की शक्ति लेकर निर्भय रहूँ। मेरे वचन में सत्यता की शक्ति हो तो मुझे कोई भय नहीं। दूसरा कोई कुछ करेगा तो असर नहीं होगा।

**प्रश्न:-** कई बार मुझे ऐसे सपने आते हैं कि मैं युद्ध के मैदान में हूँ, चारों तरफ खून है और सिपाही हैं। तो क्या यह भी पूर्व के कर्मों के कारण होता है? किस युक्ति से इस प्रकार के स्वप्न बंद हो सकते हैं?

**उत्तर:-** जैसे-जैसे संकल्प और संस्कार शुद्ध होते जाते हैं, भय दिलाने वाले स्वप्न आने भी बंद हो जाते हैं। संसार का वातावरण ऐसा है इसलिए

इस प्रकार के स्वप्न आते हैं। इसमें डरने की जरूरत नहीं है। और ही ऐसे स्वप्न देखकर हमें बहादुर बन जाना है। दिन-भर में हमारा जैसा संबंध, व्यवहार और कर्म होता है, वैसे ही स्वप्न होते हैं परन्तु कई बार ऐसे स्वप्न भी होते हैं जिनका रोज के जीवन से कोई संबंध नहीं होता, उनका संबंध पूर्व कर्म या पूर्व जीवन की घटना से भी हो सकता है। स्वप्न पर चिन्तन न करें। हम तो स्वप्न में ईश्वरीय ज्ञान, योग या सेवा के दृश्य ही देखते हैं।

**प्रश्न:-** प्लैन को प्रैक्टिकल करने का आत्मविश्वास कैसे आए?

**उत्तर:-** जब ऊँची मंज़िल पर जाना है, पढ़ाई में पास होना है तो निराश कभी नहीं होना है। हिम्मत, उमंग, उल्लास को सदा साथ रख, जो गलती महसूस की है, वह दुबारा न हो, आगे के लिए खबरदार, होशियार हो जायें तो हम अच्छे बन सकते हैं। किसी भी हालत में आज तक ना खुद से नाउम्मीद हुए हैं, ना किसी और से हुए हैं। नाउम्मीद कभी नहीं होना है। हिम्मत के साथ उम्मीद रखनी है। गलतियाँ जो हुई थीं, वे बीत गईं। जो हम चाहते हैं, वो कर सकते हैं। पुरुषार्थ में सदा जुटे रहना है। हमारी स्टूडेंट लाइफ है। हम राजयोगी, सच्चे, अच्छे एग्जाम्पल दुनिया के लिए बनना चाहते हैं। हम सुस्ती, गफलत को छोड़ दें तो जो चाहें वो कर सकते हैं।

**प्रश्न:-** कई देशों में बहुत गरीबी

और भूखमरी है तो अवश्य ही सामूहिक रूप में उनके ऐसे कर्म रहे होंगे। उन लोगों के प्रति हमारी क्या ज़िम्मेवारी है?

**उत्तर:-** दुनिया के हर कोने में कभी हिंसा के कारण, कभी गरीबी के कारण दुख होता ही रहता है, इसमें हमारी ज़िम्मेवारी क्या है? दुखी को देखकर दुखी होना हमारी ज़िम्मेवारी नहीं है। अगर बीमार को देखकर डॉक्टर भी दुखी जैसा चेहरा बना लेता है तो उस बीमार का इलाज कोई नहीं कर सकता। वह डॉक्टर ऑपरेशन नहीं कर सकता। लेकिन डॉक्टर जानता है कि यह क्या बीमारी है, मुझे क्या करना है, तो मदद करता है। मन में दुखी नहीं होता है लेकिन दुखी का दुख दूर करने का पुरुषार्थ करता है। इसी प्रकार से हम भी यदि हिंसा और भूखमरी का बार-बार चिन्तन करेंगे तो उससे इतना फायदा नहीं हो सकता। लेकिन आपसी प्रेम बढ़ाने के लिए अच्छे वायब्रेशन फैलायें। आपने देखा होगा, किसी दुखी के दिल की बात प्यार से सुन लो तो भी उसका आधा दुख दूर हो जाता है। उसको जो चीज़ ज़रूरी चाहिए, उसमें मदद करो तो भी आधा दुख दूर हो जाता है। दुखियों को देखकर हमें तरस अवश्य आता है पर दुखी होने की बजाय दुखहर्ता परमात्मा की याद से शांति और प्रेम का वातावरण फैलायें ताकि अंदर में जो दुख की बहुत महसूसता है वह कम हो जाये।